सर्वोदय प्रेस सर्विस

बुलेटिन

साप्ताहिक सर्वोदय समाचार विचार सेवा, 29 संवाद नगर, नवलखा, इंदौर – 452001 (म.प्र.) फोन एवं फैक्स – (0731) 2401083

संस्थापक–सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्रकुमार
कार्यकारी सम्पादक : चिन्मय मिश्र

E.mail - indoresps@gmail.com

वर्ष : 15(56), अंक 42 पृष्ठ संख्या 10 प्रकाशनार्थ सप्रेस आलेख : 125 इंदौर, शुक्रवार 15जनवरी 2016

(कृपया 17 जनवरी पूर्व प्रकाशित न करें)

बुंदेलखंड : संकट में उम्मीद का सहारा

भारत डोगरा

देश के सबसे केंद्र में स्थित बुंदेलखंड सूखा व ओलावृष्टि से लगातार प्रभावित हो रहा है। पिछले डेढ़ दशक से लगातार मौसम प्रतिकूलता की मार झेल रहा यह क्षेत्र अब उम्मीद कर रहा है कि नीति निर्धारक इस क्षेत्र का संकट दूर करने के लिए कुछ नए ढंग से सोचेंगे। जिस तरह जीवनबीमा, जीवन का पर्याय नहीं हो सकता ठीक उसी तरह कृषि बीमा भी कृषि का विकल्प नहीं हो सकता। – का.सं.

उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड अंचल के बांदा जिले (बिसंडा ब्लाक) के ओरम गांव में मन्नूलाल के घर में गहरी उदासी जैसे पसर कर बैठ गई है और वहां से जाने का नाम नहीं ले रही है। कुछ महीनों पहले मन्नूलाल ने इसी आंगन में दिन दहाड़े एक पेड़ से फांसी लगा ली थी। आसपास के कई लोग देखते रह गए और गहरे आवेश और अवसाद से त्रस्त मन्नूलाल ने गले में फंदा डालकर अपना जीवन समाप्त कर दिया।

उस समय तमाम अधिकारी आए और उन्होंने सहायता के आश्वासन दिए पर वास्तव में इस परिवार को कोई सहायता नहीं मिली। दिसंबर माह में जब हम यहां पंहुचे तब उनकी पत्नी कहीं मजदूरी के लिए गई हुई थी। एक बेटा प्रवासी मजदूर के रूप में किसी दूर के क्षेत्र में जा चुका था, छोटा बेटा आसपास ही मजदूरी की तलाश में भटक रहा था व बेटी श्यामा बहुत उदास और अकेली बैठी हुई थी। वह इतनी दुखी और निराश थी कि कुछ बोल ही नहीं पा रही थी।

बुंदेलखंड यात्रा के दौरान आत्महत्या करने वाले किसानों के परिवार के सदस्यों से मिलने पर बार–बार यह अहसास हुआ कि वे अपने को बहुत अकेला महसूस कर रहे हैं। आर्थिक तंगी के अतिरिक्त कई महिलाओं को और भी कई तरह की परेशानियों को झेलना पड़ रहा है जैसे उनसे जमीन छीनने के प्रयास हो रहे हैं। इस स्थिति में यह बहुत जरूरी है कि उनकी समस्याओं पर तुरंत ध्यान दिया जाए।

बांदा जिले के सामाजिक कार्यकर्ता राजा भैया बताते हैं कि आत्महत्या से प्रभावित परिवारों की विस्तृत जानकारी एकत्र कर उन्होंने सरकार को उपलब्ध करवाई थी। इसके लिए लखनऊ में उच्चस्तर पर बातचीत भी हुई थी। कई परिवारों को सहायता राशि मिली भी है, पर मन्नूलाल जैसे कई परिवारों को बिना कोई कारण बताए इस सहायता से वंचित रखा गया।

महोबा जिले के सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक मिश्र ने भी आत्महत्या से प्रभावित अनेक परिवारों की जानकारियां जुटाने के लिए बहुत दौड़–धूप की थी। वे बताते हैं कि कई प्रयासों के बावजूद इन परिवारों को समुचित सहायता नहीं मिल सकी और प्रभावित महिलाएं अपनी समस्याओं को लेकर भटक रही हैं।

इन विकट स्थितियों में उम्मीद को जीवित रखना बहुत जरूरी है। इस तरह के गंभीर हादसों से प्रभावित परिवारों से प्रशासन को संपर्क रखना चाहिए और जो सरकारी सहायता स्वीकृत हुई है उसे सम्मानजनक ढंग से प्रभावित परिवारों

❖ श्री भारत डोगरा प्रबुद्ध एवं अध्ययनशील लेखक हैं।